श्रीत्रीपूरसुंदरीकर्मोद्भववीधी

श्रीत्रीपूरसुंदरीकर्म्मोद्भवपीथी



ॐ नमः श्रीपञ्चदेवताये ॥ अथ वुद्धाम्नाय कर्म्मार्च्चन विधि लिख्य
ते ॥ अथ पूजायकर्ण निश्चय ॥ देवीयात कुम्हजल स्नानादि साधन
कावण्य ॥ यजमान पूष्पराजन ॥ अङ्गादि ॥ यथ वाक्य ॥ आम्ना
यक्रमतो देवाङ्गसारन ॥ सिद्धिनस्तु क्रियानरुत्यादि ॥ आचार्य्याय
कमण्डलु पूष्पराजनं समर्पयामि ॥ ॥ आचार्य्यलद्यान पूजानरु
मां ।

नु ॥ घावचन्दनादिना लिखनु ॥ वलिया तंस्का यथनु ॥ अर्घ्यादि ॥ य
थावाह्नस्थ्यापि॰ ॥ गुरुनमस्कार॰ ॥ न्यास॰ ॥ जलपात्र अर्घपात्र
पूजयनु ॥ पञ्चवलि ॥ कृत मन्त्रल पियाउरे लि ॥ नना घाव पूजा ॥
ॐ ह्रीं कामदेवाय नवेद्येन नमः ॥ दक्ष ॥ ॐ ह्रीं वसन्ताय श्री थ्ये २ ॥ वाम
॥ ॐ ह्रीं घावश्री थ्ये २ ॥ ऊर्द्ध ॥ ॐ ह्रीं गं गणपतये २ ॥ ॐ ह्रीं संस नक्ष

थ्ये २ ॥ अधे ॥ ॐ ह्रीं धं दहत्येन नमः ॥ थ्वनि घावपूजा ॥ ॥ ब्रह्माद्या
दिभूमिनाक्ष दिवहिहोनाक्षगादि ॥ नना विघ्नवलि दयाकनु ॥ ॐ
ह्रीं सर्वविघ्नकृद्भ्यः सर्वभूतेभ्यः सर्वपिशाचेभ्यः ॐ मा वलिं टद्ने २ः
स्वाहा ॥ धूपदीपजयस्मात्र ॥ निर्वाणं निर्विकल्पमित्यादि ॥ पूर्वेद
किग ॥ स्रूतगन्धादि ॥ वलिविसर्जन ॥ ॥ नना आचार्य्य पूजा ॥

मणुयमाविशेतु॥ सिद्धार्थं गृहीत्वाय ठेतु॥ अयसर्पन्तु परहूताः
परहूताभुविसंस्थिता। येहूता विघ्नकर्त्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥ क्रो
४अस्त्राय फट्॥ दशदिक्बन्धनं॥ हस्ततालत्रयाच्छोटन ३॥ नमो
लोकपालपूजा॥ पूर्वदिग्भ्रमनान्ते॥ ॐ ह्रौं लं इन्द्राय नमः॥ २ रं
अग्नये २॥ २ मं यमाय २॥ २ क्षं नैरृत्याय २॥ २ वं वरुणाय २॥ २ यं वा

यवे २॥ २ सं कुबेराय २॥ २ हं ईशानाय २॥ २ ऊं ब्रह्मणे नमः॥ २ अं
अनन्ताय नमः॥ इति दिग्पूजा॥ ॥ नमो आसनपूजा॥ २ ॐ वास्त्वधि
पतये ब्रह्मणे २॥ ह्रैं आधारशक्तिकमलासनाय २। पृथ्वीनिक्षिप्य॥
आसनं धृत्वाय ठेतु॥ पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देव
ता आसने विनियोगः॥ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता

।त्वं च धारयत्नु मां नित्यं पवित्रं कुरु चासनं ॥ विश्वकमलाय नमः ॥ ॐ
कूर्म्मासनाय २ ॥ इति आसनपूजा ॥ ॥ आत्मपूजा ॥ ऐं ह्रीं सौः आत्मा
य रुद्र ॥ पुष्पभाजनशोधनं ॥ वामहस्तेन जलमकरगृहीत्वा ॥ सूर्य
सम्पत्तियन्त्र स्तम्भाधि ॥ अर्घ्यानस्त्र ॥ यज्ञपत्नास्त्र ॥ ॐ ह्रीं ह्लीं यं हूँ वं हूँ
फट् स्वाहा ॥ सुदर्शनास्त्र ॥ ॐ ज्वलन ज्वाय सुदर्शनास्त्राय हूँ फट् स्वाहा ॥

साग्रशिखिक्रिय ॥ ॐ ऊर्द्ध्वकेशी विरूपाक्षि मांसशोणितभक्षणि ॥ तिष्ठ
देवि शिखामध्ये चामुण्डे ह्यपराजिते ॥ गुरुपूजा ॥ ऐं ह्रीं श्रीं गुरुभ्यो
नमः ॥ ३ परमगुरुभ्यो २ ॥ ३ परमेष्ठिगुरुभ्यो २ ॥ स्वशिरसि पूजयेत्
॥ मूलमन्त्रेन करशुद्धि ॥ ॐ अं मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ आं अनामिकाभ्यां नमः
॥ सौः कनिष्ठिकाभ्यां २ ॥ ॐ अं अंगुष्ठाभ्यां २ ॥ ॐ अं तर्जनीभ्यां २ ॥ सौः कर

सम्पुटाय २ ॥ ॐ आँ सो ४ कनगल पृष्ठाय २ ॥ इति करन्यास ४ ॥ ॥ हृ
तप्सुद्धि ॥ क्रीँ ह्स ४ ॥ कुण्डलिनी सुषुम्नालीन थं कायावज्र ज्ञसनय ॥
यँ ४ खवनसोदूकायाव यायपूजगंनक्ष ॥ नी उ भयावकूलाव
मनवाहयाय ॥ यीं ८ रस्म पूवरालयाव ज्ञवनसादूकाय ॥ वँ ४
वज्ञनीध नमूमगवृष्टि शवरालयाव ज्ञवनसादूकाय ॥ ली उ
तनीवदवरालयावनयांकूठावनय ॥ ही ८ खवनसापिकाय ॥
यायभाकरालयावब्रह्मसवाढकूण्डलनी हृदयसनय ॥ ॥ प्रा
णप्रतिष्ठा ॥ ॐ आँ ह्रीँ क्रोँ यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हौँ ह्स ८ साहंमम प्राणाः ॥ इ
ह प्राणाममजीव इह स्थितः ८ ममसर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनश्चक्षुः ८ श्रोत्र
णघ्राणप्राणा इहायान्तु सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा क्रोँ ह्रीँ आँ ॥ वार ३ ॥ इति

प्राणप्रतिष्ठा॥ ॥आय॥ गंगायमदयय २ उव॥ गुंगुनृखा २ स्वव॥ दीदृ
म्यिय २ भृग्र॥ गमह्प्राणायामं॥ ॥अथ मातृकान्यासः॥ अं शिरसि॥
आं मुखवृत्ते॥ इं दक्षनेत्रे॥ ईं वामनेत्रे॥ उं दक्षकर्णे॥ ऊं वामक
र्णे॥ ऋं दक्षनासापुटे॥ ॠं वामनासापुटे॥ ऌं दक्षगण्डे॥ ॡं वामगण्डे
एं ऊर्द्ध्वोष्ठे॥ ऐं अधरोष्ठे॥ ओं ऊर्द्ध्वदन्ते॥ औं अधोदन्ते॥ अं तालु॥ अः जि

ह्वायां॥ कं दक्षबाहुदले॥ खं कूर्प्परे॥ गं मणिबंधे॥ घं अंगुलमूले
॥ ङं नखे॥ चं वामबाहुदले॥ छं कूर्प्परे॥ जं मणिबन्धे॥ झं अंगुलमूले
॥ ञं नखे॥ टं दक्षकटौ॥ ठं जानौ॥ डं गुल्फे॥ ढं पादांगुलिमूले॥ णं नखे
तं वामकटौ॥ थं जानौ॥ दं गुल्फे॥ धं पादांगुलिमूले॥ नं नखे॥ पं दक्षपा
र्श्वे॥ फं वामपार्श्वे॥ बं पृष्ठवंशे॥ भं गुह्ये॥ मं नाभौ॥ यं सृ मन॥ वं

लिंगे ॥ लँ नाभौ ॥ वँ उदरे ॥ रँ हृदि ॥ यँ कण्ठे ॥ सँ ललाटे ॥ हँ मूर्द्धो ॥ लँ
मस्तकादिपादान्तं ॥ हँ पादादिमस्तकान्तं ॥ ॐ नमो हकान्यास ८ ॥ ॥
नन ८ षडासनन्यास ८ ॥ ॐ ह्रीं सौं ८ त्रिपुरभैरवी अमृताम्बुजासनाय नम
८ ॥ पादाग्रयो ॥ ॐ ह्रीं क्लौं ८ त्रिपुरसुन्दरी विद्याकाम्बुजासनाय २ ॥ जानौ
ॐ ह्रीं सौं ८ त्रिपुरवासिनी पद्मासनाय २ ॥ ऊरौ ॥ ॐ ह्रीं क्लौं ८ त्रिपुरमा

लिनी सर्व्वमन्त्रासनाय २ ॥ गुह्ये ॥ ॐ ह्रीं वें त्रिपुरा सिद्धेश्वरी साध्यसिद्धाः
सनाय २ ॥ मूलाधारे ॥ ॐ नमो षडासनन्यास ८ ॥ ॥ ॐ ह्रीं क्लौं ८ त्रिपुरसु
न्दरी आत्मानन्द २ स्वाहा हृदये ॥ ॐ ह्रीं सौ ८ सौ ८ क्रों ८ अरूक्राय रू
ट ॥ दिग्बन्धनं ॥ अनेन प्राकारेन्ध्यायत ॥ ॥ नन ८ वालान्यास ८ ॥ ॐ
ह्रीं सौं ८ अरूक्राय रूट ४ ॥ ३ त्रिपुरसुन्दरी अरुणाम्बायां नम ८ ॥ ३

त्रिपुरसुन्दरीतर्ज्जनीभ्यां २॥ ३ त्रिपुरसुन्दरीमध्यमाभ्यां २॥ ३
त्रिपुरसुन्दरीअनामिकाभ्यां २॥ ३ त्रिपुरसुन्दरीकनिष्ठाभ्यां २
॥ ३ त्रिपुरसुन्दरीकरतलकरपृष्ठाभ्यां २॥ ऐं त्रिपुरसुन्दरीहृदया
यनमः॥ क्लीं त्रिपुरसुन्दरीशिरसेस्वाहा॥ सौः त्रिपुरसुन्दरीशि
खायैवषट्॥ ऐं त्रिपुरसुन्दरीकवचायहुं॥ क्लीं त्रिपुरसुन्दरीः

नेत्रत्रयायवषट्॥ सौः त्रिपुरसुन्दरीअस्त्रायफट्॥ इतिवाल
न्यासः॥ ॥अथवसिन्यादिन्यासः॥ ऐं ह्रीं श्रीं अं १ ३ ब्लूं वसिनीवाग्दे
वतायैनमः॥ शिरसि॥ ३ कं ३ क्लीं कामेश्वरीवाग्देवतायै २॥
ललाटे॥ ३ वं ३ ब्लूं मादिनीवाग्देवतायै २॥ भ्रूमध्ये॥ ३ टं ३
ह्लूं विमलावाग्देवतायै २॥ कण्ठे॥ ३ तं ३ ज्म्रीं अरुणावाग्देवता

यै२॥हृदये॥३ऐं ऊं क्लीं जयनीवाग्देवतायै२॥नाभौ॥३ऐं४
म्र्रीं सर्वेश्वरीवाग्द ... वतायै२॥आधारे॥३ऐं३ क्ष्म्रीं कौलि
नीवाग्देवतायै२॥पादे॥ इति वशिन्यादि॥ ॥ततः नवयोनि
न्यासः॥ऐं दक्षकर्णे।क्लीं वामकर्णे।सौः चिबुके॥१॥ऐं दक्षशं
खे।क्लीं वामशंखे।सौः मुखे॥२॥ऐं दक्षनेत्रे।क्लीं वामनेत्रे।सौः नासि

कायां॥३॥ऐं दक्षवक्षे।क्लीं वामपार्श्वे।सौः पृष्ठे॥४॥ऐं दक्षकूर्प
ने॥क्लीं वामकूर्परे।सौः ककुदि॥५॥ऐं दक्षजानौ।क्लीं वामजानौ।
सौः लिङ्गे॥६॥ऐं दक्षपादे।क्लीं वामपादे।सौः गुह्ये॥७॥ऐं दक्ष
पार्श्वे।क्लीं वामपार्श्वे।सौः हृदये॥८॥ऐं दक्षस्तने।क्लीं वामस्तने।
सौः कण्ठे॥९॥इति नवयोनि॥ ऐं हृदि।क्लीं ललाटे।सौः ब्रह्म

रन्ध्रे ॥ सौं ४ ब्रह्मरन्ध्रे ॥ क्ष्रीं ललाटे ॥ ऐं हृदि ॥ ४ ॥ विलासविलासन्यास
४॥ ॥ तत्त्वत्रयं पीठ न्यास ४ ॥ ऐं क्ष्रीं सौं ४ क्ष्रूं भूमिचक्र कामगिर्याल
यपीठे मित्रीश नाथ अस्मिन् पीठे कामेश्व क्ष्रूं नीदेवी ब्रह्मात्मशक्ति ४
श्रीपादुकां ॥ भ्रूमध्ये ॥ ३ क्ष्रूं स्वयं चक्र जालन्धर पीठे श्री षष्ठीश
नाथ अस्मिन् पीठे वज्र क्ष्रूं नीदेवी विष्णु आत्मशक्ति ४ श्री पादुकां ॥

हृदि ॥ ३ क्ष्रूं सामचक्र पूर्णगिरि पीठे श्री उड्डीश नाथ अस्मिन् पीठे
कुलगमा क्ष्रूं लिनीदेवी ब्रह्मात्मशक्ति ४ श्री पादुकां ॥ भ्रूमध्ये ॥ ३ क्
ओ ह ३ स ४ ब्रह्मचक्र उड्डीयान पीठे चर्या ४ नाथ अस्मिन् पीठे मकोटि
पूर्णमन्द नीदेवी पर ब्रह्मात्म शक्ति ४ श्री पादुकां ॥ ब्रह्मरन्ध्रे ॥ ४
मिचक्र ४ पीठ ॥ ॥ तत्त्व त्रित्व न्यास ४ ॥ क्ष्रूं आत्मतत्त्वाधिकाये

त्रिपुरायै नमः ॥ आधार ॥ ह्रूँ विद्यातत्वव्यापिकायै त्रिपुरायै नम
ः ॥ हृदि ॥ ह्रूँ शिवतत्व व्या ह्रूँ पिकायै त्रिपुरायै नमः ॥ भ्रूमध्ये ॥
ह्रूँ ह्रूँ ह्रूँ सर्व्वतत्वव्यापिकायै त्रिपुरायै त्रिपुरायै नमः ॥ ब्रह्मरन्ध्रः
ह्रूँ ह्रूँ ह्रूँ न्ध्रे ॥ इति त्रितत्वन्यासः ॥ ॥ अथ श्रीचक्रन्यास ॥ ऐं ह्रीं श्रीं
बिन्दुचक्राय नमः ॥ वसंथाउस ॥ ऐं ह्रीं श्रीं त्रिकोणचक्रासनाय नम

ः ॥ कपालस ॥ ऐं ह्रीं श्रीं अष्टारचक्रासनाय नमः ॥ मिरहास ॥ ३ अ
न्तर्दशारचक्रासनाय नमः ॥ कंठस ॥ ३ बहिर्दशारचक्रासनाय नमः ॥
नृत्यातस ॥ ३ चतुर्दशारचक्रासनाय नमः ॥ नाभी ॥ ३ अष्टदलः
कमलाय नमः ॥ लिंग ॥ ३ षोडशदलकमलाय नमः ॥ मार्ग्ग
स ॥ ऐं ह्रीं श्रीं चतुरस्र त्रैलोक्याय नमः ॥ या ॰ स ॥ इति चक्रन्यासः ॥

॥ ॥अथ शंखस्थापनं ॥ अस्त्राय फट् प्रक्षाल्य त्रिपदीं निधाय ॥ वं अ
ग्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः ॥ हं सूर्यमण्डलाय २ ॥ सं सोमम
ण्डलाय २ ॥ त्रिपदिका पूजा ॥ शंखं पूजयेत् ॥ वं वरुणाय नमः ॥
शंखं न जलेन ॥ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती ॥ नर्मदे
सिन्धु कावेरी जलेस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥ मूलेन जप ॥ २ ॥ शंखमुद्रा

२धेनुमुद्रा अर्घ्यो चन्दनाक्षतं दद्यात् ॥ तज्जलेन सर्वं सिंचयेत् ॥ तत्र
अर्घस्थापनं ॥ आनन्दकलशपूजा ॥ चन्दनादि धूपयवनं द्रव्येणापूज
येत् ॥ वज्रसंस्कारः ॥ ॥ ततः सामान्यार्घस्थापनं ॥ त्रिकोणवर्तु
लयेन प्रणामस्य निर्माय ॥ पूजयेत् ॥ वं अग्निमण्डलाय नमः ॥ अ
धारं स्थापयेत् ॥ हं सूर्यमण्डलाय नमः ॥ कलशद्रव्येणापूरय

त्॥ सँसामम ण्डलाय षोडश कलायनमः॥ षडङ्गेन पूजयेत्॥ मू
लेन जपेत्॥ न॥ त्रियाञ्जलि॥ ३॥ आवाहनादि पानि मुद्रा॥ पंचब
लिं दद्यात्॥ ॥ ततः कलश पूजा॥ न्यासः॥ ध्यानं कृत्वा पा
दुकां॥ कौमारार्णवाय ३॥ कन्दाय ३॥ नाथाय ३॥ पद्माय ३॥ क
शवाय ३॥ कर्णिकाय ३॥ कमलाय ३॥ वृषासनाय ३॥ ध्यानं॥

स्फटिकसंकाशं त्रिनेत्रं चन्द्रमौलिनं। वरदाभयहस्तं च मु
द्रामालाधरं हरं॥ जपे ध्यात्वा महादेवं मिष्टकामार्थसिद्धये॥
ध्यानपूर्वं नमः॥ त्रियाञ्जलि॥ ॐ ह्रीं सम्पूर्णश्च नमः हौं नवा
य श्रीं ओं संपूर्णकलशाय श्रीमहालक्ष्मीशक्तिसहिताय श्रीं स
४ श्रीं ह्रीं ॐ पादुकां॥ ब्रह्मादि पंचपदवन्धा ३॥ बलि॥ गं श्रीं

गदिसय सागवस्या ३॥ ॐ ध्वस्नमादि ॐ छविनजीवस्या ३॥ ॐ
न्द्रादि यगला कपालस्या ३॥ ॐ दिस्यादिन व न्ह स्या ३॥ ॐ नन्दा:
दि ॐ छ कुलनागवाउँस्या ३॥ ॐ धानमन्त्र न त्रियाउँरलि॥ ३॥ सं
घर्गुकुलगयस्ँदं वलि ग्रन्द्र रस्वाहा॥ धूपदीपजयस्कात॥ ॥
ननर्कुरु धूजा॥ ॐ धनशंक्ल्यादि॥ सिंहासनायपादुकां॥ ॐ

न॥ लाक्कानसनिलाध्वी विन्दु पात्रववाहया॥ भाहिनीध्ववध्वा
नां ॐ मृगलायवान्नम॥ त्रियाउँरलि॥ त्रैॐ ह्रौं ॐ आनन्द भकिरुव
वानंदवीवाधिपतय श्रीमहाविद्यावाउ ह्रौं वाउध्वनीह्रौं कु
लकुरुहदानकायपादुकां॥ व्रह्माल्यादि॥ पंचवदगी ह्रौं न
त्रियाउँरलि॥ वलि॥ ॐ वाहनादि॥ धूदीजयस्कात॥ पगु या

समस्तुदकान॰उवनूपिनी। सुनादवीपना॰क्किनमामिस्त्र
नयायनी॥ ॥नमामहायात्रपूजा॥ आथन॰क्क्यादि॥ध्यनास
नाययाद्कां॥ध्यान॥हिंगुनडवसंकाशं मानिक्यप्रतिवागिनीं
।नवयौवनसंपन्नां त्रिनत्रांच चतुर्भुजां॥वांधनूनंकुशंच पाशं
चवधर्तिसदा।नक्कापंकजमध्यस्थां दियरूपावबानूनीं॥यभुः

पाससमूस्कंदकबन॰क्कभादिनी। सद्यभयनमानंदमहायानक
गुह्य॥त्रियाउरलि॥क्रुं क्रूं क्रूं लिखास्य कुंन्द महाउंबवाययाद्
कीं॥अलिनाक्कादि॥ ॐ अधानाहुँ॥वलि॥आवाहनादि
धूपदीपजपश्चात॥ ॥उग्रचण्डपूजा॥ ॥नमःपूजासंकल्पंकृ
त्वा॥ध्यानादि॥श्रीसुन्दरीचनलसीलिध्ये.कुमुकामत्रस्य.श्री

महात्रिपुरसुंदरी देवता रुद्रयामलागमनोक्त। श्री। वामके

श्वरमुखाम्नात आदिसिद्ध श्रीसुन्दरीपादुकासेवन धर्म्मार्

र्थकाममोक्षप्राप्तिकामनया श्रीगुरुनाथसमधिष्ठित ग्रन्

थ्यादिपी० देवतापूजा श्रीसुन्दरीपूजानर्थे तमहं करिष्ये

॥ ॥पुष्पाञ्जलिं विधायपा०न्॥ अस्य श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीम

न्त्रस्य दक्षिणामूर्त्तिऋषि॥ पंक्तिश्छन्द त्रिपुरसुन्दरीदेवता क्लींवीजं

क्लूं शक्ति॥ स्कूं कीलकं चतुर्व्वर्ग्गसाधनविनियोग॥ दक्षिण

मूर्त्तिऋषि॥ शिरसि॥ पंक्तिश्छन्द मुखे॥ श्रीमहात्रिपुरसु

न्दरीदेवता हृदि॥ कं वीजं नाभि॥ हं शक्ति॥ गुह्ये॥ सं की

लकं चतुर्व्वर्ग्गसाधनविनियोग॥ अङ्ग॥ न्यासेषिश्छन्द॥ ॥

नमः ॥ विशेषपात्रपूजा ॥ रं अग्निमण्डलाय २ ॥ हं सूर्यमण्डलाय
२ ॥ सं सोममण्डलाय २ ॥ ॐ आधवगकृय २ ॥ पात्रस्त्रिकाला
वाय ॥ देव्यर्थनं ॥ मूलपलपावक्रक्काखडुखडुसंहरनमल्लमन
ससरुवि ॥ अमृतं नमस्थायात्रं धियुमनसमावहन्तु ॥ वसु४सं
स्कान४ ॥ पंचमूद्राकन ॥ द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं स४ ॥ मीनमूद्रा ॥ अ्राञ्जम

कृ४ ॥ क्लीं ग्लौं त्रैं अमृते २ अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणी क्लीं अमृतं
श्रावय २ सौः४ सूर्धाण्ड्रक्रोश्मयं विभावय चतुर्वर्गचिन्तां सिद्धिः
सामञ्ज्य ये विपर्क्तन् २ महाश्वचनी मूद्रां प्रकटय २ क्लं ३ फट्ः
स्वाहा ॥ अकथहादि चक्रं लिखन् ॥ ध्यानमूयानि मूद्रा ॥ मूलजो
प१० ॥ सूद्धिंगृहित्वा ध्यथांके स्थल देव्या मध्ये तर्पयन् ॥ ३ ॥ क्रीं

आनन्दभैरवायस्नाथवौवौषट्॥ कलिपात्र स्थापनं॥ गुरुः
पात्रण क्रियात्स्वपात्रपूजा॥ वं अग्निमण्डुलायनमः॥ हं सूर्य
मण्डुलायनमः॥ सं सोममण्डुलायनमः॥ षडंगपूजा॥ नवात्मा॥ मू
लन क्रियाउँ२लि॥ ३॥ आवाहनादिया निमुद्रां प्रदर्शयेत्॥
मूलन पूजायकनवंसिचयत्॥ ॥कलिअर्घ स्थापन॥ ॥

आत्मपूजा॥ ॥दक्षिणामूर्त्तिवायनपूजा॥ ॥स्वशिनसिगुरुपा
दुकागुरुन तर्पणं॥ ऐं ह्रीं श्रीं अमुकानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि
तर्पयामि॥ ३ परप्रकाशानन्दनाथश्री॥ ॥३ परशिवानन्दना
थश्री॥ ॥३ पराशक्त्यम्बा॥ ॥३ कौलेश्वरानन्दनाथश्री॥
॥३ शुक्लाम्बा॥ ॥३ कुलेश्वरानन्दनाथश्री॥ ॥३ कामेश्वरानन्द

नाथश्री ॥ ८ ॥ ह्रूँ नियनाथनाख्या दिव्यौघ ॥ १ ॥ ३ रागनन्दना
थश्री ॥ ३ क्रीडानन्दनाथश्री ॥ ३ समायानन्दनाथश्री ॥ ३ सह
जानन्दनाथश्री ॥ ४ ॥ ह्रूँ तियनाख्या सिद्धौघ ॥ २ ॥ ३ नकानन्द
नाथश्री ॥ ३ विचित्रानन्दनाथश्री ॥ ३ गगनानन्दनाथश्री ॥
३ विश्वानन्दनाथश्री ॥ ३ विमलानन्दनाथश्री ॥ ३ मदनानन्द:

नन्दा
नाथश्री ॥ ३ भुवनाँनाथश्री ॥ ३ लोचनानन्दनाथश्री ॥ ३ लीला
नन्दनाथश्री ॥ ३ स्वात्मानन्दनाथश्री ॥ ३ प्रियानन्दनाथश्री ॥ ३
ज्ञानन्दानन्दनाथश्री ॥ ३ श्रूवलाम्बाशक्तिश्रीयुतूषानन्दनाथ
श्री ॥ ३ श्रात्मशक्तिसहितसर्व्वानन्दनाथश्री ॥ ३ पनाशक्तिसहि
तयागानन्दनाथश्री ॥ ३ श्रूमृगानन्दनाथश्री ॥ १३ ॥ ह्रूँ तियना

श्वामानोय४॥३॥ इति गुरुपूजा४॥ ॥तत्व आचमनं॥ आर्द्रकीः
गृहीत्वा॥ गुरुपादं गुरुवदानयं॥ लक्ष्मि याते गङ्खो दत्वा॥ त्वया
तत्वयं गृहीत्वा॥ ॥अथ विघ्नहरनं॥ गां गणपतये वलिं गृः
ह्न स्वाहा॥ वां वटुकनाथाय वलिं गृह्न २ स्वाहा॥ क्षां क्षेत्रपालाय
वलिं गृह्न २ स्वाहा॥ ॥अथ पीठ पूजा॥ ॐ ह्रीं मण्डुकाय नमः४॥२

कालाग्निरुद्राकोय २॥२ आधारशक्तय २॥२ मूलप्रकृत्यै २॥२
अनन्ताय २॥२ कूर्मनायनमः २॥२ पृथिव्यै २॥२ क्षीरसमुद्राय २॥२
विद्रुमद्वीपाय २॥२ सुवर्णगिरये २॥२ कल्पोद्यानाय २॥२ रत्नम
ण्डपाय २॥२ कल्पवृक्षया २॥२ वेदिकायै २॥२ रत्नकुट्टिमाय २॥२
रत्नसिंहासनाय २॥ दिग्विदिक्षु धर्माद्विपूजनं॥ २धर्माय नमः४॥अ

नाये२।२वैनाग्न्याये२।२तेजस्व्याय२।२सूर्याग्न्याय२।२सूक्ष्मानाय
नमः२ सूवैनाग्न्याये२।२सूनैश्वर्थ्ये२।२मायायै२।२विद्यायै२।२
नानायै२।२सूर्धस्कन्दाय२।२ऊर्ध्वस्कन्दाय२।२तत्त्वनूयानकाय२
।२कालिकायै२।२हृद्यमञ्जुलाय२।२सोमञ्जुलाय२।२सूर्याग्नि
मञ्जुलाय२।२सं सत्वाय२।२नं नजसेनम।तं तमस२।२अं ऊं मं स्थाना

त्मन२।२मायातत्त्वाय२।२कलातत्त्वात्मन२।२परतत्त्वात्मनेनमः
॥ ॥ऐं क्लीं सौः त्रिपुरेश्वरीमूर्त्तनाद्वासनायनमः।ऐं क्लीं क्षौः त्रिपु
रसुन्दरीपार्वत्याङ्गासनाय २॥ ह्रीं क्लीं सौः त्रिपुरवासिनीदव्यात्मास
नाय२॥ हैं ह्क्लीं ह्सौः त्रिपुराश्रीचक्रासनाय२॥ श्रीं ह्क्लीं ह्सौः त्रिपुर
मालिनीस र्वमन्त्रासनाय२॥ क्रों क्लीं ब्लें त्रिपुरा ए सिद्धेश्वरीसा

ध्व सिद्धासनायर॥३ लं ओडियानपीभयर॥३ यं कामगिरिपी
भयर॥३ वं जालंधरपीभयर॥३ वं पूर्णगिरिपीभयर॥ लं ब्र
ह्मखल पृथिव्याधिपतयश्रीमहेश्वरायदधमासनायर॥२ वं विष्णुव
रुणाप्याधिपतयश्री॥॥२ वं रुद्रायतेजाधिपतयश्री॥॥२ यं ई
श्वरायवायाधिपतयश्री॥॥२ हं सदाशिवायव्योमाधिपत

यमंचवलयाधिकारश्रीपदासनायनमः॥मध्ये॥२ प्रह्लाद
लिकायर॥नद्रूपवि॥ ऐं ह्रीं श्रीं समस्तप्रकटगुप्तगुप्ततरसंप्रदा
यकुलकौलनिगर्भरहस्यातिरहस्यपरापररहस्य
योगिनीश्रीपादुकांपूजयामि॥ ऐं ह्रीं सौः॥ कामेश्वरकामेश्वरी
मूर्तिस्थानमः॥श्रीचक्रवामदक्षिणे॥३ कुलनाथवल्लभावामः

हितपादुकां पूजयामि ॥ २ कुलवक्रनाथवल्लभांबासहितपा
दुकां पूजयामि ॥ त्रिखण्डमुद्रां प्रदर्श्य धूपादीमावाहयेत् ॥
ह्रीं श्रीं क्लीं ॥ महाप्रभवनानन्दस्थपरमानन्दनन्दिनी । जगत्त्रयहि
त श्रीं मातरब्धिहृदयनभस्थनी ॥ सुस्मितमञ्जुलसान्निध्यं कुरु २
स्वाहा ॥ ध्यानं ॥ वर्लोक्य मञ्जुलाहासां चतुर्वक्त्रत्रिलोचनां ।

याश्च भक्तगणानांच अभयं भजयन्तीं रुजापहां ॥ ॐ निधिस्वात्मिन
सि पूर्वं दद्यात ॥ पुनर्ध्यात्वा वक्त्रं पूर्ववत् आवाहयेत् ॥ ह्रगवनिरः
गमना रुद्रव प्रीमद्धात्रि पूनरस्पन्दनी ॐ हागच्छ २ ॐ हतिष्ठ २ ॐ हस
न्निहितो भव २ ॐ हसन्निरुद्धो भव २ भूत्राधिष्ठानं कुरु २ मम पूजां
गृहाण २ ह्रौं अवगुण्ठ्यामूर्त्तीकृत्य स्तुत्य संनद्धः संमुखीकृत्य या

न्यासकलीकृत्य महामुद्रयाच्छाद्य देव्यै षडङ्गं समर्पयेत् ॥
॥ ॥प्राणप्रतिष्ठा ॥ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं । सोऽहं हंस
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्याः प्राणा इह प्राणाः । श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्या
जीव इह स्थितः । श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्याः सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनो
नयनश्रोत्रघ्राणप्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा । क्रों

क्रों ह्रीं आं ॥ मूलमन्त्रेण श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी चैतन्याय नमः ॥ त
या ॐ ईरलि । तर्पयेत् ३ ॥ इति प्राणप्रतिष्ठा ॥ ॥ मूलमन्त्रमुच्चा
र्य श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै अनन्तार्घ्यं नमः । अथार्घ्यं २ । इदमाच
मनीयं २ । इदं स्नानं २ । अनन्तं वस्त्रं २ । सिन्दूरनाकर्णं २ । अनन्तपुष्पं २ ।
अनन्तधूपं २ । अनन्तदीपं २ । अनन्तनैवेद्यं २ । अनन्तताम्बूलं नमः । अनन्त

मनिडङ्खार्य्य॥ श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीश्रीनाथ. बनानिगन्धपुष्पः
धूपदीपनैवेद्यादिकेन श्र॥ ॥ नमावक्रपूजाम॥ ३ः
गैं कुलगणपतिनाथवल्लहाम्बासहितगुरुपादु
का॥ नैमप्रकाशन॥ ॥ ३ वाँ कुलवटुकवल्लहाम्बा
पादुका॥ अग्निकोणे॥ ३ यां योगिनीम्बापादुका॥

३ क्षाँ क्षेत्रपालस्ववल्लहाम्बापादुका॥ ॐ नैरऋ
त्यकोणे॥ ॥ वटुकः धत्वा कपालपूर्वादि॥ स्वगुरु
पूजयेत्॥ ॐ श्रीपरमशिवनाथपादुका॥ ३ का
मेश्वर्य्याम्बापादुका॥ ३ दिव्यौघानन्दनाथपादुका॥
३ सर्वानन्दनाथ ३॥ ३ ब्रह्मानन्दम्बा ३॥ प्रकादिः

थ्याघा ॥ ॥२दिव्यानन्दनाथ ३ ॥२विंक्षनन्दनाथ
३ ॥२ङ्गाकिंग्वयानन्दनाथ ३ ॥२कमलानन्दना
थ ३ ॥२मनोहन्वानन्दनाथ ३ ॥२यवमानन्दनाथ ३ ॥
२स्वात्मानन्दनाथ ३ ॥२कमलानन्दनाथ ३ ॥ब्रभ
मनुजाग्म ॥ ॥२यवमालिवनाथ ३ ॥२पवमलक्ष्या

म्बा ३ ॥२क्लोंगत्रनाथ ३ ॥२गुह्याकद्युम्बा ३ ॥२
कुलेश्वयानन्दनाथ ३ ॥२कामेश्वरयोम्बा ३ ॥पू
नंदव्याघ्रसकादिव्याघा ॥ ॥२ज्ञानन्दनाथ ३ ॥
२क्रींयानन्दनाथ ३ ॥२सहजानन्दनाथ ३ ॥२ग्म
नानन्दनाथ ३ ॥२विंक्षनन्दनाथ ३ ॥२विंश्वनन्दना

थ३॥२विमलानन्दनाथ३॥ ॐ ह्रयोग्यहृदय४सि
द्धाघा॥ ॥२मदनानन्दनाथ३॥२भुवनानन्दनाथ३॥
२लीलानन्दनाथ३॥२स्वात्मानन्दनाथ३॥२प्रिया
नन्दनाथ३॥२निर्मलानन्दनाथ३॥२विद्यानन्द
नाथ३॥२कमलानन्दनाथ३॥ ॐ त्रिगुरुक्रमपू

जा॥ ॥नमाय श्रिमहाबोधानन्दवतुरश्रयचक्र
ममापूजयन॥ ऐं ह्रीं श्रीं अणिमासिद्धिश्री पादुका॥
३लघिमासिद्धि३॥३महिमासिद्धिश्री ३॥३ ॐ ईशि
त्व सिद्धिश्री३॥३वशित्व सिद्धिश्री३॥३प्राकाम्य सिद्धि
श्री३॥३भुक्ति सिद्धिश्री३॥३ ॐ इच्छा सिद्धिश्री ३॥३प्रा

कि सिद्धिश्री ३॥ ३ सर्वकार्यसिद्धिश्री ३॥ यथिमादिने
भयानकगामाकुजनसंपूजा॥ ॥ ० इति प्रथमवरुणतो
त्रैलोक्यमोहनयंत्रपूजाविधि॥ ॥ ३ श्रीगुरु श्रीकामः
रूपी ० प्रयागक्षेत्र जालंधरब्रह्मा ... मङ्गला
वेग्रन्थिः श्रुक्रतु गिनाङ्गैनवकुत्रयायुग्मश्री



पादुकां ॥ पश्चिम ॥ ३ ऐं जग्री कालापुरीची ८०
वामानसिद्धि ॐ क्षायै माहेश्वरी ... नये ॐ
श्री ३ वकत्रयाय गमश्री ३ ॥ वायुव्य ॥ ॥ ३ ऐं जयोत्त
पी ८० कालापूरकरुडाहायै कामाय्यै कौमारि
जाम्यायै ... त्रयाय गमश्री ३ ॥ उत्तर ॥ ॥

३ओँ जं ओड्डियान पीठ अघोरनाथ क्षेत्र समयाय दे
वीक्षेत्र ऊर्ध्व क्रूलरु बवत्रयायुग्मश्री ३ ॥ वृ गी गाने
॥ ॥ ३ओँ जं मलय पीठ जयविजक्षेत्र ऊर्ध्ववाय वा
क्षे ऊ क्रूड्नमठरु बवत्रयायुग्मश्री ३ ॥ पूर्व ॥ ॥
३ओँ जं कुलान्तक पीठ रविन्द्र क्षेत्र ऐन्द्री ००न्दा

न्ये किलकिलाम्बा ऐक्रू ४ कापालिस रु बवत्रयायु
ग्मश्री ३ ॥ आग्नि ॥ ॥ ३ओँ जं जालंधर पीठ एकाम्र क्रू
क्रूआहाय वाम्रूदक्षु ऊ ऊकू लीषन रु बवत्रयायुग्म
श्री ३ ॥ यम ॥ ॥ ३ओँ जं देवीकोट पीठ आहाये म
हाल क्रूजौक्रूक ४ संहार रु बवत्रयायुग्मश्री ३ ॥ ॥

ँनमये॥ ॥वाअवउनग्रामावर्ज्जनपूजा॥ शूनि
वाञ्छितियवउनग्रसर्व्वसिद्धिमयचक्रपूजावि
धि४॥ ॥ॐ ह्रीं श्रीं सर्व्वसंक्षोभनीमुद्राजवीग्री ३॥ ३
सर्व्वविद्रावणीमुद्राजवीग्री ३॥ ३ सर्व्ववशंकरीमु
द्राजवीग्री ३॥ ३ सर्व्वोन्मादनकरीमुद्राजवीग्री ३॥

३ सर्व्वमहांकुशामुद्राजवीग्री ३॥ ३ सर्व्वखेचरीमुद्राज
वीग्री ३॥ ३ सर्व्वविजयमुद्राजवीग्री ३॥ ३ सर्व्वत्रिखण्डामु
द्राजवीग्री ३॥ ३ सर्व्वयोनिमुद्राजवीग्री ३॥ पश्चिमादि
मध्यान्त्यामावर्ज्जनसंपूज्य॥ शून्मि नूयकयक्रनायि
काध्यान॥ ॥पूजकाकिकनावाम दकूअकूवव ध्यांडी
व।

४॥ गुह्यका त्रिनयनामाय। वाला श्री त्रिपुराय ॥ ३ ओं
आं ह्रीं त्रिपुरादेवी श्री ३॥ सध्वसंपूज्य ॥ ३ ओं द्रां सर्वसं
क्षोभणी मुद्रादेवर्ग्यामि नमः४॥ ७ गायत्रकल्याणि त्रि
प्रथमत्रैलोक्यमोहनचक्रपूजाविधि४॥ ७ ह्रीं त्रि:
नियचतुरस्र पूजाविधि४॥ ॥ अथ अष्टदलसंपु

ट॥ ३ अष्टदलपद्मायनमः४॥ २ ओं कामाकर्षिणी
नित्याकलादेवी श्री ३॥ २ ओं बुद्ध्याकर्षिणी नित्याक
लादेवी श्री ३॥ ७ ओं अहंकाराकर्षिणी नित्याकलादे
वी श्री ३॥ ३ ओं शब्दाकर्षिणी नित्याकलादेवी श्री ३॥
२ ओं स्पर्शाकर्षिणी नित्याकलादेवी श्री ३। ३ ओं रूपाक

र्षणी नित्या कलाज्वी श्री ३॥ ॐ रसाकर्षणी नित्या
कलाज्वी श्री ३॥ ॐ गंधाकर्षणी नित्या कलाज्वी श्री
३॥ ॐ चित्ताकर्षणी नित्या कलाज्वी श्री ३॥ ॐ धैर्या
कर्षणी नित्या कलाज्वी श्री ३॥ ॐ स्मृत्याकर्षणी नित्या
कलाज्वी श्री ३॥ ॐ नामाकर्षणी नित्या कलाज्वी श्री

३॥ ॐ बीजाकर्षणी नित्या कलाज्वी श्री ३॥ ॐ आत्मा
कर्षणी नित्या कलाज्वी श्री ३॥ ॐ अमृताकर्षणी नित्या
कलाज्वी श्री ३॥ ॐ अ४गरीराकर्षणी नित्या कलाज्वी
श्री ३॥ पश्चिमादि नैऋत्यान्तं वामावर्तेन पूज्य॥ अणिमि
न्यक्रम ध्यावकुनायिका ध्यानमन्त्र॥ ॥पा१५कू१

वमाशी मि हाव्रयो नि व उ ह्रया ॥ गु क्षा ॥ गु क्षा व मस्य ः
क्षा नमा मि त्रिपुरेश्वरी ॥ ॐ ह्रीं सौः त्रिपुरेश्वरी देवी श्री
३ ॥ चक्रनायिका मध्ये पूज्य ॥ ॐ ह्रीं सर्व्वविद्राविणी मुद्रा
दर्शयामि नमः ॥ अमागु क्या गिन्ह दिनिय सर्व्वाशाय
परिपूरक चक्र धा उ हा दल पूजा विधि ॥ ॥ अथ अष्ट

उष्टद ३

दलपद्म पूजयेत् ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अष्टदलपद्माय नमः ॥ ॐ कं
खं गं घं ङं अनङ्गकुसुमा देवी श्री ३ ॥ पश्चिम ॥ ॐ चं छं जं
झं ञं अनङ्गमेखला देवी श्री ३ ॥ ॐ टं ठं डं ढं णं अनङ्गम
दना देवी श्री ३ ॥ पूर्व ॥ ॐ तं थं दं धं नं अनङ्गमदनातुरा
देवी श्री ३ ॥ दक्षिण ॥ ॐ पं फं बं भं मं अनङ्गरेखा देवी श्री ३ ॥

वायव्य॥ ॐ यँ रँ लँ वँ अनङ्गमदनिका देवी श्री ३॥ आग्ने
य॥ ॐ शँ षँ सँ हँ अनङ्गकुसुमा देवी श्री ३॥ नैरृत्य॥ ॐ लँ
क्षँ अनङ्गमालिनी देवी श्री ३॥ ॐ ह्रीं ईशान॥ अस्मिन् चक्र
चक्रनायिका ध्यानमन्त्र॥ ॥ पाशाङ्कुशधनुर्बाणधरः
कुसुमविलप्रभा। सकलवर्णहृज्जनियो त्र्यस्रा त्रिपुरसु

न्दरी॥ ऐं क्लीं सौः त्रिपुरसुन्दरी देवी श्री ३॥ सर्वस्वमी
पूजा॥ ॐ सर्वसंक्षोभिणी मुद्रा देवीयामिनमः॥ एता
गुप्ततरयोगिन्य तितीयसर्वासंक्षोभका चक्र
पूजाविधिः॥ ॥ भागनिरूप्य॥ ॥ अथ चतुर्दशार
त्रिकोणचक्रपूजयेत्॥ ऐं क्लीं सौः चतुर्दशारचक्रः

यनम ४ ॥ ३ सर्व्वसंक्षोभिणीदेवीश्री ३ ॥ ३ सर्व्वविद्राव
णीदेवीश्री ३ ॥ ३ सर्व्वाकर्षणीदेवीश्री ३ ॥ ३ सर्व्वाह्लाद
नीदेवीश्री ३ ॥ ३ सर्व्वसंमोहनीदेवीश्री ३ ॥ ३ सर्व्वस्तः
म्भनीदेवीश्री ३ ॥ ३ सर्व्वजृम्भनीदेवीश्री ३ ॥ ३ सर्व्वव
शंकरीदेवीश्री ३ ॥ ३ सर्व्वरंजनीदेवीश्री ३ ॥ ३ सर्व्वोन्मा

दिनीदेवीश्री ३ ॥ ३ सर्व्वार्थसाधनीदेवीश्री ३ ॥ ३ सर्व्व
सम्पत्तिपूरणीदेवीश्री ३ ॥ ३ सर्व्वमन्त्रमयीदेवीश्री ३ ॥
३ सर्व्वद्वंद्वक्षयंकरीदेवी ३ ॥ पश्चिमादिका ८ नमस्त्या
क्ष्यामावर्हणसंपूज्य ॥ अभिनूचक्रचक्रनायिकाः
ध्यानमन्त्र ॥ ॥ ॐ न्दीवरदयंजाख्या तथायागां कु

लडूयांदक्षानदिविनाशासा ग्रयत्रिपूर्ववासिनी॥
हैं क्लीं ब्लें ४ श्री त्रिपूर्ववासिनीदेवीश्री ३॥ मध्येह
पूज्य॥ क्लीं क्लीं सर्ववश्यकर्षणीमुद्रादर्शयामिनम
४॥ त्रनासम्प्रदायथायोगिन्यचतुर्थसर्वसौभाग्यदा
यकचक्रपूजाविधि॥ ॥अथवाङ्कदगात्रिकोण

चक्रपूजयत्॥ ॐ दशारचक्रायनम४॥ ॐ सर्वसि
द्धिप्रदादेवीश्री ३॥ ॐ सर्वसम्पत्प्रदादेवीश्री ३॥
ॐ सर्वप्रियंकरीदेवीश्री ३॥ ॐ सर्वमंगलकारिणीदे
वीश्री ३॥ ॐ सर्वकामप्रदादेवीश्री ३॥ ॐ सर्वदुःख
विमोचनीदेवीश्री ३॥ ॐ सर्वमृत्युविनाशिनीदेवीश्री

३॥ ॐ सर्व्वविघ्नविनाशनीदेवीश्री ३॥ ॐ सर्व्वाङ्गसुन्द
रिदेवीश्री ३॥ ॐ सर्व्वसौभाग्यदायनीदेवीश्री ३॥ य
न्त्रिदिका॥ नैऋत्यां कवामावर्त्तेन पूजयेत्॥ भू
म्मिनुखजु चक्रनायिका ध्यानमन्त्र॥ ॥पद्मद्वय
वनालीनि सोहमानमुजाकुजा॥ शुक्लपद्मासनस्थ

का॥ श्रीपनी त्रिपुराश्रय॥ ह्रैं क्लीं ह्सौं ४ त्रिपुरा
श्रीदेवीश्री ३॥ मध्ये॥ ॐ सं स ह्रीं मादनका
मुद्रा देव्या मिनम ४॥ एनाकुलकौलया नि
व्ययप्व ॐ म सर्व्वार्थिहा धक चक्रपूजाविधि ४॥ ॥
अथ भूरुनक देशावलिका॥ चक्रपूजयेत्॥ ॐ

ॐ नन्दगणचक्राय ३॥ ३ सर्व्वज्ञानदेवीश्री ३॥ ३ स
र्व्वशक्तिमयदेवीश्री ३॥ ३ सर्व्वैश्वर्यप्रदायनीदेवी
श्री ३॥ ३ सर्व्वज्ञानमयीदेवीश्री ३॥ ३ सर्व्वव्याधिविना
शिनीदेवीश्री ३॥ ३ सर्व्वाधारस्वरूपिणीदेवीश्री ३॥
३॥ सर्व्वपापहराञेदेवीश्री ३॥ ३ सर्व्वानन्दमयीदेवीश्री ३॥

सर्व्वरक्षास्वरूपिणीदेवीश्री ३॥ ३ सर्व्वेप्सितफलप्रदा
देवीश्री ३॥ अणिमादिका ८ नैनरूपयान्तु वामावर्त्ते
न संपूज्य॥ ॐ सिंनवचक्रचक्रनायिका ध्यान नमस्तु ॥
रुधिराङ्गि माहाङं मातुलुंगववि‌ग्रहं। नीलवर्ण्णं त्रि
नेत्रीव श्रय त्रिपुरमानीव॥ ॐ ह्रीं क्लीं ब्लूं श्री त्रिपुरमालि

नीलग्रीवी ३ ॥ मण्डलसंपूज्य ॥ ओं सर्व्वमहाकुल मुद्रा
दर्शयामि नमः ॥ एतानि गरुड्यागिन्य अष्टम ८ सर्व्व
ज्ञा कम्प चक्र पूजा विधिः ॥ ॥ अथ अष्टत्रिकोण चक्र
पूजयन् ॥ अष्टकोण चक्राय २ ॥ वज्रिन्या अष्टकन ८ प
च्चिमादि कोन नैमत्योकर्सं पूज्य ॥ अस्मिन् चक्र चक्रेण ॥

यिका ध्यानमन्त्र ॥ ॥ स्वर्ण्णवर्ण्णं प्रनष्का [illegible]
हू मन्दिना ॥ वं [illegible] ति पूजा सिद्धा यागिन्य [illegible] ॥
ओं ह्रीं श्रीं त्रिपुरा सिद्धा [illegible] ३ ॥ मण्डलसंपूज्य ॥ ॥ ओं
सर्व्व रक्षक विमुद्रा दर्शयामि नमः ॥ एतानि [illegible]
यागिन्य सप्तम सर्व्व [illegible] चक्र पूजा विधिः ॥ ॥

अथ वानायात्रयोयूथवक्रऽतूष्टकानाहक्ष त्रिकालसे
क्षलात्र प्रपूजयत् ॥ प्रयोयूथवक्रायनमः ॥ ॐ ह्रीं
श्रीं ॐ यां रां लां वां सं डं ढं क्लीं ब्लूं सः जम्भनाय कामः
देवस्य वाणस्थानमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ॐ डं ढीं क्लीं ब्लूं सः ॐ यां
रां लां वां सां डं जम्भनाय कामदेवस्य वाणस्थाने २ ॥ ॐ पं ब्लूं

मः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ॐ यां रां लां वां सां डं ढां धं मोहनाय कामदेव
स्य बाणाय २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ॐ डं ढं क्लीं ब्लूं सः ॐ यां रां लां वां
सां धं मोहनाय कामदेव बाणाय २ ॥ उक्तं च ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ॐ
यां रां लां वां सां डं ढीं क्लीं ब्लूं आकर्षणाय कामदेवस्य बा
णाय २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ॐ डं ढीं क्लीं ब्लूं सः ॐ यां रां लां वां सां

ॐ वशीकरणनायकामेश्वरी पाशाय २ ॥ ऐं ह्रीं श्रीं
ऐं ह्रां ह्रीं क्लीं ब्लूं सः ४ ऐं यां रां लां वां सां ह्रां ह्रीं क्लीं ब्लूं सः ४ क्रों
स्म्र्ह्नायकामेश्वर अंकुशाय २ ॥ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रां ह्रीं क्लीं
ब्लूं सः ४ ऐं यां रां लां वां सां क्रों स्म्र्ह्नायकामेश्वर्यंकुशा
य २ ॥ दक्षिणे ॥ अस्मिन् चक्रचक्रनायिका ध्यानम् ॥ ९

मृदुमालागलायक्ता पुष्पकाशनवालया ॥ १ ॥ क्षुं
पुष्पसेनाथिरा वन्देश्री त्रिपुराम्बिका ॥ क्लौं
ऐं क्लीं ह्रौं ४ त्रिपुराम्बिका श्री ३ ॥ मध्ये संपूज्य ॥
ऐं ह्रीं सर्वविजमुद्रादर्शयानम ४ ॥ अनानिवद्द
क्लूं स्यास्यागिन्यतुमूमवचक्र सर्वाम्नादकम्

चक्रपूजाविधिः॥ ॥अथ त्रिकोणपूजयेत्॥ त्रि
कोणचक्रायनमः॥ प्रथमबीजेन वाग्भवपूजः
येत् अग्रकोणे॥ ॥द्वितीयबीजेन कामराजबीः
पूजयेत्॥ दक्षिणकोणे॥ ॥तृतीयबीजेन श
क्तिबीजपूजयेत्॥ वामकोणे॥ ॥अस्मिन्‌चक्रेः

पूः
चक्रनायिकाध्यानमन्त्र॥ वंधूकंष्यासंकामा पञ्च२
वक्त्रायच्छ्रनग्न॥ पाशांकुशवचारीणा मुण्डमालाग
लसत्कं॥ वियामन्त्रप्रदादेवी महात्रिपुरसुन्दरी॥
ऐं क्लीं सौं॥ त्रिपुरसुन्दरी श्री ३॥ मध्ये॥ ऐं
सर्वे त्रिखण्डमुद्रादर्शयामिनमः॥ प्रजापवाः

पद्मानि थाग्नि थ नवमचक्र सर्व्वसिद्धिमयचक्र
पूजाविधि ॥ ॥ अथ त्रिकोण बिन्दुमध्ये पूज
यन ॥ बिन्दुचक्राय नमः ॥ ॐ त्रियकूटमुख्यार्य्यै
त्रिकोणस्थं मध्ये त्रिपुरसुन्दरी ॥ अस्मिन् चक्र
ध्यानमन्त्र ॥ महायकामेश्वर्याः ॥ पद्मरागसमप्र

भा । पाशाङ्कुशेक्षुचापबाणपुष्पधारयन्ती ॥ ॐ जाम्य
दि ॥ ॐ त्रियकूटमुख्यार्य्यै सर्व्वानन्दमयचक्र बिन्दुच
यर्व्वचक्रेश्वरी त्रिपुरसुन्दरी सर्व्वचक्रेश्वरी
सर्व्वमन्त्रेश्वरी सर्व्वविद्येश्वरी सर्व्ववीरेश्वरी ॥ सर्व्व
पीठेश्वरी सर्व्ववागेश्वरी सर्व्वयोगेश्वरी सर्व्वसि

ॐ ग्वं वी जगदुत्पत्ति मातृका चक्रात्सदपना॰ समु
द्भा॰ स ह्रिद्रय॰ सायुधा सवाहना॰ सपरिवारा॰
श्री त्रिपुरसुन्दरी जदी पश्चरवायमा पमया चस्वप
र्य यासर्व्वपियाग॰ सं पूजिता॰ संतु पादुकां पूजा
यामि॥ लयाङ्गश्री गणमंगमसंपूजा॥ लयाङ्गन्यास

त्रिमल्यास॰ नक्रेमन स्वस्वस्थानेषु॰ ॐ ह्रीं गानन॰ अ
ग्नि॰ नैऋत्ये॰ त्रिकारणेषु॰ हृदय॰ शिर शि॰ कवच
मध्ये नेत्र॰ पूर्व्वादिषु अस्त्र न संपूजा॥ आवाहन॥ नै
सर्व्वया नि मुद्राद र्शयामि नमः॥ ॥ नखाकर्षनमंत्र॥
ऐं क्लीं ग्लौं नैं डां ड्रीं क्लीं हूं सः॰ नैं यां जूं लीं वीं सों कामश्च

वीविकु कामरूल प्रजगा सर्व्वार्थसाधक सर्व्व नव
वृन्दक त्रिजगन्मश्चारु कात्रि ति ज्रां ज्रीं ज्रूं नें ह्रीं
ह्रीं ॐ त्रिपुरा कामेश्वरी समयाजवी श्री पादुकां त
र्प्पयामि ॥ कामेश्वरी तर्प्पण समन्त्र ॥ ॥ नें ज्रीं श्रीं ज्रीं
ज्रूं ह्रूं नें ज्रीं ज्रीं ह्रीं ह्रूं स ॐ नें यां रां लां वां सां सर्व्वार्थसा

धनी वज्रेश्वरी वज्रपञ्जरमस्थगजग्रां क्रां क्रूं
ह्रूं नें ज्रीं ग्रीं नित्यमादद्रव ज्रीं ग्रीं वज्रेश्वरी समया
जवी श्री पादुकां ॥ ज्रीं ग्रीं नें त्रिपुरा वज्रेश्वरी श्री
तर्प्पयामि ॥ वज्रेश्वरी तर्प्पण समन्त्र ॥ ॥ नें ज्रीं ग्रीं र
गयुक्त रगि निरु गो जनि रु सवर रुगमाल रु

गर्य्यागिनि रुगनिपतनि सर्व्वनल्वाकरु २ गऽयवी

ऐं ह्रूं ऊं ह्रूं रु ह्रुं म्लूं ब्लूं रु क्लिन्नसर्व्वानि रुगानिमः

वशमानय ह्रौं क्लौं ग्रों श्रीं त्रिपुर रुगमालिनी सम

याऽदेवी श्री पादुकां तर्प्पयामि॥ रुगमालिनितर्प्प

णमस्तु॥ ॥ऐं क्लीं श्रीं रुगवतिह्रूं नित्याकामऽयवी

ह्रीं श्रीं सर्व्वनलवसंकचिसः त्रिपुरेश्वरी ऐं विश्वं:

क्लीं श्रीं महात्रिपुरसुन्दरीदेवी श्री पादुकां तर्प्प

यामि॥ त्रिपुरसुन्दरीतर्प्पणमस्तु॥ ॥एतानि

रहस्याग्निमदगमयचक्र सर्व्वानन्दमयचक्र

पूजाविधि॥ ॥थवमालकायाय॥ कौमारी पू

हरि नायक

जा॥ ॥बलिप्रदानं॥ ॐ क्लीं सों ८ देवीपुत्रवटुक
नाथ कपिलजटाभारभास्वरज्वालामुखगन्ध
पूयारु अलिपि नवलिंग क्रर सर्व्व विघ्नानं
नाशय २ हूँ फट् स्वाहा॥ ॐ ह्रीं क्रीं उद्ध्वब्रह्म गुना
वा देवीगगणनल निस्कर्ज्जुनलवायाना:

लवानसवाहालिलपवनया हुतकृताञ्जिशा
वा॥ पी० ॠत्रायपीभ दिवुवपरकना धूप
दीपादिकन ८ पीनाद्यासदान गुरुवलि:
विधिनां पाउपिरुन्डुवया। साध्यसिद्धय सर्व्वे
अलिवलिपीनाद्यासदानगुरुवलिविधि

नाँ याउ विघ्नद्रवद्या॥ साध्यसिद्धयसर्द्ध अलि
वलि पिगि नँ वलि पूजा गक्रूर म ङ भ निं कोम
स्वाहा॥ ॐ माँ वलि पूजा गक्रूर म म ङ भ नि
कूमूर हूँ फट् स्वाहा॥ योगिनी थाकस्वाहा। ३
क्रौं क्रौं हूँ ह्रैं ह्रौं ह्रः ८ हूँ फट् त्रया लोय अलि वलि

निवानक्राय ४

सहिमवलि गक्रूर सर्व्वविघ्नान्नासय २ हूँ फट्
स्वाहा॥ ॐ क्रौं ग्लौं ग्लीं ग्लूँ गं गणपतये वरवरद सर्व्व
जनमवशम ८ मानय २ सर्व्वापद्विवलि गक्रूर स्वा
हा॥ ॥ धूप दीप नैवेद्य॥ जप स्तोत्र॥ ॥ तर्प्पण।
प्रतिष्ठा॥ ॥ थुपि पूजा॥ ॥ यज्ञ न्ययन॥ ॥ लक्

बलि॥ ॥खाबान॥समय तयत॥आचार्य्यपूजा॥
कखिना॥जजमान ओ रिस्स कविय॥ कोमालि॥
पूजा॥ ॥ॐ निश्री त्रिपूजसन्ध्या कर्म्मार्च्चन
विधि ४ समाप्त ४॥ ॥श्रीधंधं ३ इयाकला न स्यामानः
गूथीतयावड़ागूया॥पसङ्क आगम सपूजायाकम्मान

पूजायानङ्क माल॥मदगजा स्योङ्कयाविघ्न ८ वनओ
ड़॥ब्रा मत पूजानेविघ्न ८ वयातमाल॥नकीनथड़
ङ्कया॥ मदसोल्योङ्कयाने जिव॥आनंद १ गजेन्द्र १ स
३ धन १ ल ३ केका १ पसलङ्कया म्हाय मवा॥ ऐ नाम
वाॐनोर्वयादातनाम॥ आगपामे १ वो न माल॥

१ दर्पा लरन विरनकत ऋषमदिष रवद्दि मरवलु
मलु नौवक्कवकवाजसमवद्दविगम लुम्हदु
ह्नि निलुम्हा लुम्हमं ग्रा मवी कउजवलदतिग नन्दि
तदववन्दे इगं इम्नौल्लि दिस क्रा रवउममसदा
संपदनाघतक्षी ॥

श्रीजं नृ किय नि र्‌ या द व म दू अस





कुम

पबद
ली

का
ली

ॐ



